अध्याय – 8
राजस्थान में पर्यटन विकास और संभावनाएं

आज अर्थव्यवस्था के विकास में पर्यटन महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में विकसित हो गया है। पर्यटन एक ऐसा उद्योग है जिसमें अपेक्षाकृत कम पूंजी निवेश से विकास को गति दी जा सकती है, साथ ही अधिकाधिक रोजगार सृजन भी संभव होता है। इसलिए सभी देश पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। पर्यटन विदेशी मुद्रा अर्जन का बड़ा स्त्रोत है इसलिए देश के विकास में पर्यटन की भूमिका बढ़ गई है। साथ ही पर्यटन से संस्कृति और कलात्मक धरोहर को संरक्षण मिलता है। पर्यटन से विश्व स्तर पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान बढ़ता है। पर्यटन उद्योग से ऐतिहासिक और प्राकृतिक सौंदर्य वाले स्थानों को सुरक्षा प्रदान करने और उन्हें विकसित करने की सोच विकसित होती है। मेलें और त्यौहारों में देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आने से लोक संस्कृति का प्रचार एवं प्रसार होता है तथा लोक कलाकारों को प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है।

राजस्थान में पर्यटन

भारत के पर्यटन में राजस्थान का विशिष्ट स्थान है। राजस्थान एक ओर जहाँ योद्धाओं की शौर्य गाथाओं से परिचय कराता है वहीं दूसरी ओर शिल्पियों, दस्तकारों, कवियों पर भी गर्व करता है। राजस्थान के दुर्ग, हवेलियां, स्तम्भ, इसके गौरवपूर्ण अतीत की याद दिलाते हैं। यहां की वास्तु शिल्प, कला, संगीत, त्यौहार एवं लोक कलाएं पूरे विश्व में पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र हैं। राजस्थान अपने प्राकृतिक सौन्दर्य और ऐतिहासिक महत्ता के कारण देशी विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है। राजस्थान मंदिर, मस्जिद, दुर्ग, अभयारण्य, झीलें, मरूस्थल आदि के कारण सुरम्य और मनमोहक पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित हो सका है।

राजस्थान के पर्यटक स्थलों का वर्गीकरण

राजस्थान के पर्यटक स्थलों को निम्नांकित श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है–

1. **प्राकृतिक स्थल –** राजस्थान को प्रकृति ने अनेक सुरम्य स्थलों से संवारा है, जिन्हें देखने का आकर्षण पर्यटकों में होता है। इसमें **पर्वतीय क्षेत्र** – माउण्ट आबू, **रेगिस्तानी बालूका स्तूपों का दृश्य –** जैसलमेर में, **पर्वतीय घाटियाँ –** आमेर की घाटी, अलवर की काली घाटी, देसूरी की नाल आदि। **प्राकृतिक वनस्पति एवं जीव–जन्तुओं के केन्द्र –** राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण, जलप्रपात जैसे मैनाल आदि। अनेक प्राकृतिक स्थल ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों के भी केन्द्र हैं।
2. **ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल –** राजस्थान का इतिहास समृद्ध रहा है और यहाँ के ऐतिहासिक स्थलों को पर्यटन केन्द्रों के रूप में विकसित किया गया है, इसमें प्रमुख हैं–

(क) **ऐतिहासिक दुर्ग –** चित्तोड़गढ़, कुम्भलगढ़ (उदयपुर), नाहरगढ़, आमेर, जयगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जौधपुर), जूनागढ़ और लालगढ़ (बीकानेर), रणथम्भौर (सवाई माधोपुर), जैसलमेर, जालौर, नागौर, शेरगढ़ के किले, तारागढ़ (अजमेर), लोहागढ़ (भरतपुर) आदि।

(ख) **पुरातात्विक स्थल –** कालीबंगा (हनुमानगढ़), आहड़ और बालाथल (उदयपुर), बैराठ (अलवर), बूँदी के गुफा चित्र, बागौर (भीलवाड़ा)।

(ग) **महल और हवेलियाँ –** जयपुर, जौधपुर, उदयपुर, बीकानेर, भरतपुर, डीग, बूँदी, अलवर, सामोद के राजमहल और जैसलमेर की हवेलियाँ पर्यटकों के आकर्षण केन्द्र हैं। शेखावटी के अनेक किले और हवेलियाँ भी देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

(घ) **धार्मिक स्थल –** राजस्थान के धार्मिक स्थलों में नाथद्वारा, पुष्कर, कोलायत, रामदेवरा, एकलिंग जी, साँवरिया जी, गलता, केसरियाजी, कैलादेवी,

सालासर, खाटू श्याम जी, जयपुर के गोविन्द देव जी का मंदिर, बिड़ला मंदिर, मोती डूँगरी का गणेश मंदिर, आदि। जैन मंदिरों में राणकपुर, देलवाड़ा मंदिर, महावीर जी का मंदिर, नाकोड़ा, पदमपुरा आदि। मुस्लिम दरगाह में अजमेर में स्थित ख्वाजा मुइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

(च) **सांस्कृतिक केन्द्र –** के रूप में ऐतिहासिक स्थलों के अतिरिक्त उत्कृष्ट स्थापत्य कला और वास्तुकला के केन्द्र राजस्थान में अनेक स्थलों पर हैं, जैसे –

(i) **जयपुर –** हवामहल, जन्तर–मन्तर, चन्द्र महल, आमेर के राजाओं की छतरी एवं मंदिर आदि।

(ii) **जैसलमेर –** पटवों की हवेली, नथमल जी की हवेली, रामगढ़ की हवेलियाँ आदि।

(iii) जौधपुर – जसवंत थड़ा

(iv) डीग – महल

(v) अजमेर – अढ़ाई दिन का झोपड़ा

(vi) बूँदी – चौरासी खंभों की छतरी, रानी जी की बावड़ी, क्षार बाग की छतरियाँ

(vii) चित्तौडगढ़ – विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ तथा किले पर स्थित मंदिर

(viii) टोंक – 'स्वर्ण कोठी', अरबी–फारसी शोध संस्थान

(ix) कोटा – जल मंदिर के पास की छतरियाँ

(x) झालरापाटन – चन्द्रभागा नदी के किनारे मंदिर एवं सूर्य मंदिर

(xi) माउण्ट आबू – देलवाड़ा के मंदिर

(xii) रणकपुर – जैन मंदिर

(xiii) डूँडलोद – इमारतें, हवेलियाँ

(छ) **मेले –** राजस्थान के मेले सांस्कृतिक धरोहर हैं, जो आज भी परम्परागत रूप में लगते हैं, अतः पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ के प्रसिद्ध मेले हैं – पुष्कर (अजमेर), तिलवाड़ा (बाड़मेर), जसवन्त मेला (भरतपुर), करणीमाता और कपिलमुनि मेला (बीकानेर), गोगामेड़ी (हनुमानगढ़), रामदेवरा (जैसलमेर), परवतसर एवं मेड़ता मेला (नागौर), दशहरा मेला (कोटा), त्रिनेत्र गणेश रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर), केलादेवी (करौली), तीज एवं गणगौर (जयपुर), जाम्बेश्वर (मुकाम), सती मेला एवं लोहारगढ़ मेला (झुंझुनू), खाटू श्याम जी (सीकर), बैणेश्वर (डूँगरपुर), ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती उर्स (अजमेर) आदि।

इसके अतिरिक्त हस्त कला के केन्द्र तथा पर्यटन विभाग द्वारा विकसित शिल्प ग्राम आदि भी पर्यटकों को राजस्थान में आकर्षित करते हैं। राजस्थान के अनेक उत्सव एवं त्यौहारों जैसे तीज, गणगौर, दशहरा, दुर्गाष्टमी, होली, अन्नकूट, नवरात्रा, दीपावली आदि भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

राजस्थान के पर्यटन स्थल

सम्पूर्ण राजस्थान पर्यटन की दृष्टि से एक अलग पहचान रखता है। यहां के दुर्ग, महल और हवेलियों के अलावा शिल्प कला, उत्सव, मेलें और प्राकृतिक सौंदर्य देखने योग्य है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशेष पहचान और आकर्षण है।

राजस्थान में पर्यटन स्थलों की दृष्टि से मारवाड़, मेवात एवं ब्रज, हाडौती, ढूंढ़ाड़, मरू क्षेत्र, गोडावन, शेखावाटी, मेवाड़, बागड़ आदि सभी क्षेत्र महत्वपूर्ण है। राजस्थान के पर्यटन विभाग ने देश–विदेश के पर्यटकों को 'पधारो म्हारे देश' का बुलावा देकर राज्य में पर्यटन हेतु आमंत्रित किया गया है।

पर्यटन विभाग का वाक्य हैं – अतुल्य राजस्थान।

1. ढूंढाड़ क्षेत्र

ढूंढाड़ में राजस्थान की राजधानी जयपुर और दौसा जिले के पर्यटन स्थल आते हैं। विश्व में जयपुर 'गुलाबीनगर' नाम से प्रसिद्ध है। जयपुर में कांच की कारीगरी, प्राचीन भित्ती चित्र से युक्त सिटी पैलेस, सवाई जयसिंह द्वारा स्थापित वैध शाला, (जन्तर–मन्तर) बिड़ला द्वारा स्थापित अन्तरिक्ष ज्ञान का खजाना बिड़ला प्लेनेटेरियम, पांच मंजिली गोल व आगे निकले हुए झरोखे एवं खिड़कियों से युक्त स्थापत्य कला का नमूना हवामहल, रामनिवास बाग प्रागंण में अल्बर्ट म्यूजियम, चिड़ियाघर, जयपुर राजघराने के वैभव की याद दिलाती स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण गैटौर की छतरियां, इतिहास के गवाह जयगढ़, नाहरगढ़ व आमेर

के किले आदि दर्शनीय स्थल है। इनके अलावा गलता, गोविन्ददेव जी मंदिर, मोती डूंगरी के गणेशजी, लक्ष्मीनारायण मंदिर आदि तीर्थाटन है। ये हिन्दुओं के तीर्थ और पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। गलता के प्रमुख कुण्ड गौमुख से निकली जलधारा दर्शनीय है। आमेर में जयगढ़, मावठा और मंदिर दर्शनीय स्थल है। रामगढ़ की झील में नौकायन की सुविधा है।

2. मेरवाड़ा क्षेत्र

मेरवाड़ा क्षेत्र में अजमेर, पुष्कर, नागौर जिलों के पर्यटन स्थल आते हैं। अजमेर जिले का पुष्कर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थस्थान है। यहां दर्शनीय स्थलों में ब्रह्मा जी का मंदिर, पुष्कर सरोवर मुख्य है। ऐतिहासिक नगरी अजमेर में ख्वाजा साहब की दरगाह, ढाई दिन का झोपड़ा, तारागढ़, आना सागर, मेयो कॉलेज, सुभाष उद्यान, संग्रहालय एवं नसियां आदि पर्यटन स्थल है।

3. मेवात एवं ब्रज क्षेत्र

मेवात एवं ब्रज क्षेत्र में अलवर, भरतपुर, एवं सवाईमाधोपुर जिलों के पर्यटन स्थल आते हैं। अलवर के पर्यटन स्थलों में बाला किला, विनय विलास महल, मूसी महारानी की छतरी, पुर्जन विहार, गवर्नमेंट म्यूजियम आदि है। अलवर के समीपवर्ती स्थलों में सिलीसेढ़, जयसमंद, पांडुपोल, भर्तहरि, वैराठ नगर एवं नारायणी माता मंदिर है। अलवर में सरिस्का टाइगर प्रोजेक्ट भी है।

भरतपुर केवलादेव पक्षी अभयारण्य के कारण जगप्रसिद्ध है। यहां के अन्य पर्यटन स्थलों में लोहागढ़, गवर्नमेंट म्यूजियम, जवाहर एवं फतह झील है। भरतपुर के निकट डीग के महल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। सवाईमाधोपुर से लगभग 10 किलोमीटर दूर रणथम्भौर अपने नेशनल पार्क और दुर्ग के लिए प्रसिद्ध है। यहां का त्रिनेत्र गणेश मंदिर श्रृद्धालुओं का आस्था स्थल है।

4. हाड़ौती क्षेत्र

इसमें कोटा, बूंदी, बाँरा और झालावाड़ के पर्यटन स्थल आते हैं। कोटा चम्बल के किनारे बसा प्रमुख औद्योगिक नगर है। यहां के दर्शनीय स्थलों में गढ़, सिटी पैलेस, चम्बल गार्डन, जगमंदिर, उम्मेद भवन, ब्रज विलास पैलेस, छत्र विलास, गवर्नमेंट म्यूजियम तथा समीपवर्ती स्थलों में कोटा बैराज, गांधी सागर डेम और रावतभाटा परमाणु विद्युत केन्द्र है। झालावाड़ के पर्यटन स्थलों में गागरोन का किला, भवानी नाट्यशाला, रेन बसेरा, झालरापाटन के मंदिर, गुफाएं, डाग, काकूनी और भीम सागर प्रमुख है। बारां में भण्डदेवरा और सीतामाता दर्शनीय स्थल है। बूंदी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है बूंदी के महल, चौरासी खम्भों वाली छतरी, रानी जी की बावड़ी आदि दर्शनीय स्थल है।

5. मरू क्षेत्र

मरू क्षेत्र के पर्यटन स्थलों में जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर और बाड़मेर के पर्यटन स्थल आते हैं। जोधपुर सूर्यनगरी के नाम से विख्यात है। यहां पुरातन ऐतिहासिकता वाला मेहरानगढ़ का किला है। इनके अलावा यहां उम्मेद भवन, जसवंत थडा, गिरदी कोट, सरदार मार्केट, मंडोर, कायलाना झील, औसियां, सरदार समंद झील रमणीय स्थल है।

बीकानेर में जूनागढ़ किला, लालगढ़ महल, संग्रहालय, देवकुण्ड के अलावा देशनोक में करणीमाता मंदिर, ऊंट अनुसंधान केन्द्र, गजनेर, कोलायत के मंदिर आदि पर्यटन स्थल है।

जैसलमेर में दूर–दूर तक फैले रेतीले धोरे पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहां पटवों की हवेली, नथमल हवेली, सालिम सिंह हवेली, गढ़ीसर, मानव चौक, दुर्ग, बड़ा भाग आदि पर्यटन स्थल है। बाड़मेर अपनी कलात्मक छपाई एवं फर्नीचर के काम के कारण प्रसिद्ध है।

6. मेवाड़ क्षेत्र

मेवाड़ क्षेत्र में उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ के पर्यटन स्थल आते हैं। अपूर्व प्राकृतिक छटा और सौन्दर्य के गोद में सिमटा उदयपुर 'झीलों की नगरी' के नाम से जाना जाता है यहाँ अनेक रमणीय स्थल है। पिछौला झील के मध्य स्थित जग मंदिर व जग निवास अपनी सौन्दर्य और फव्वारों की अद्‌भूत छटा के लिए प्रसिद्ध है। वृक्षों और पुष्पों से लदे पौधे की अनुपम छटा से युक्त सहलियों की बाड़ी राजस्थान के प्रसिद्ध उद्यानों में एक है। उदयपुर के पास महाराणा प्रताप की वीरभूमि हल्दीघाटी है जहां की गाथा सुन पर्यटक नतमस्तक होते हैं। फतहसागर व स्वरूप सागर नौका विहार के लिए प्रसिद्ध है। राजसमंद बांध कला का

उत्कृष्ट नमूना तथा जयसमंद कृत्रिम झील है। नाथद्वारा और कांकरोली महानतीर्थ है। चित्तौड़गढ़ के पर्यटन स्थलों में यहां किला, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, पद्मिनी महल, मीरा मंदिर, कालिका माता मंदिर, जयमल और पत्ता महल, सावंरिया जी आदि प्रमुख है। महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित कुंभलगढ़ में बादल महल के अलावा अन्य दर्शनीय स्थल है।

7. शेखावाटी क्षेत्र

इस क्षेत्र में सीकर, झुंझुनू एवं चूरू के पर्यटन स्थल आते हैं। चूरू में ढोला–मारू की चित्रकारी देखने योग्य है। अन्य स्थलों में सालासर, हनुमान मंदिर, पिलानी व तालछापर आकर्षक स्थल है। सीकर व झुन्झुनू की हवेलियां दर्शनीय है। चूरू का तालछापर अभयारण्य काले हिरणों के लिए प्रसिद्ध है।

8. बागड़ क्षेत्र

इस क्षेत्र में डूंगरपुर व बांसवाड़ा के पर्यटन स्थल आते हैं। डूंगरपुर में जूना महल, बैनेश्वर, गैल सागर झील तथा बांसवाड़ा में माही बांध, बादल महल, त्रिपुर सुन्दरी मंदिर, रंग जी मंदिर, कागदी झील आदि पर्यटन स्थल है।

9. गोड़ावन क्षेत्र

इस क्षेत्र में राजस्थान का प्रसिद्ध पर्वतीय स्थल माउंट आबू तथा देलवाड़ा जैन मंदिर है। यहां अन्य पर्यटक स्थलों में नक्की झील, सनसेट पोइंट, गुरू शिखर मुख्य है। रणकपुर में प्रसिद्ध जैन मंदिर है।

पर्यटक विकास हेतु राज्य सरकार के प्रयास

राज्य सरकार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है। राजस्थान में समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा के कारण पर्यटन विशेष ध्यान देने वाला क्षेत्र है। राज्य सरकार द्वारा पर्यटन विकास हेतु उठाये गये कदम निम्नलिखित है –

1. **पर्यटन निदेशालय** – इसकी स्थापना 1955 में की गई। यह पर्यटन स्थलों का विकास, पर्यटन से संबंधित साहित्य प्रकाशन तथा पर्यटकों के परिवहन, आवास आदि महत्त्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करता है।

2. **राजस्थान राज्य पर्यटन विकास निगम लिमिटेड** – इसकी स्थापना एक अप्रैल, 1979 को की गई। यह राज्य में पर्यटन स्थलों को विकास, संरक्षण एवं उनके आस–पास बुनियादी सुविधाओं के विकास हेतु महत्त्वपूर्ण गतिविधियां संचालित कर रहा है। इस निगम द्वारा वीड़ियो कैसेट 'ड़ेजर्ट ट्राइ एंगल' तैयार किया है। इसमें राज्य के पर्यटन स्थलों और संस्कृति को चित्रित किया गया है। निगम के द्वारा राज्य में अनेक होटलों और मिडवे का संचालन किया जा रहा है। निगम भारतीय रेल मंत्रालय के सहयोग से शाही रेलगाड़ी का भी संचालन करता है।

3. **पर्यटन को उद्योग का दर्जा** – राजस्थान सरकार ने 1989 में पर्यटन क्षेत्र को उद्योग का दर्जा प्रदान किया। पर्यटन को उद्योग का दर्जा मिल जाने से उद्योग को उपलब्ध होने वाली सुविधाएं और छूट पर्यटन इकाइयों को भी उपलब्ध है।

4. **हैरिटेज होटल योजना** – राजस्थान के वैभव को संजोने वाले किलों, महलों, गढ़ों तथा हवेलियों के संरक्षण के लिए पर्यटन विभाग की ओर से हैरिटेज होटल योजना बनाई गई। वर्ष 1991 में पुरानी हवेलियों एवं महलों को होटलों में बदलने की यह योजना 1995 तक तीव्रता से चली। इससे कई पुराने महलों को संरक्षण मिला। विदेशी पर्यटक दूरस्थ इलाकों तक पहुंचने लगे। पर्यटक पंचतारा होटलों में ठहरने की अपेक्षा हैरिटेज होटलों में ठहरना शान समझते हैं।

5. **पर्यटन पर बजट आवंटन** – वर्ष 2010–11 के राज्य बजट में पर्यटन ने विकास के लिए 25 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। बजट में आमेर किले व घाट की गूणी को सांस्कृतिक हब और एडवेंचर टूरिज्म को बढ़ावा देने की घोषणा की गई है। इसके अलावा तीन सितारा से कम वाले होटलों एवं रेस्टोरेंट्स में भोजन पर वैट की दर 14 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दी है। जयपुर में अप्रैल 2008 में ग्रेट इण्डियन ट्रेवल बाजार का आयोजन किया।

6. **पर्यटक परिपथों का विकास –** राज्य में पर्यटकों की सुविधा के लिये पर्यटन विभाग ने पर्यटन स्थलों के समूहों को पर्यटक परिपथ (Tourist Circuits) के रूप में विकास किया है। राज्य के पर्यटक परिपथ हैं – जयपुर परिपथ, चूरू परिपथ, अलवर परिपथ, हाड़ौती परिपथ, मेवाड़ा परिपथ, शेखावटी परिपथ तथा माउण्ट आबू परिपथ।

राजस्थान की पर्यटन नीति

राजस्थान सरकार ने राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन नीति की घोषणा की है। राजस्थान सरकार द्वारा प्रथम पर्यटन नीति 2001 में घोषित की गई।

प्रथम पर्यटन नीति 2001– राजस्थान की प्रथम पर्यटन नीति के निर्धारित किये गये उद्देश्य निम्नलिखित है :

1. समृद्ध पर्यटन संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग।
2. गांवों में रोजगार सृजन।
3. समृद्ध एवं विविध हैण्डीक्राफ्ट विकसित करना।
4. पर्यटन को जन–जन का उद्योग बनाना।
5. सामाजिक व आर्थिक विकास में पर्यटन के योगदान को बढ़ाना।

राज्य की प्रथम पर्यटन नीति में इस बात पर बल दिया गया कि राज्य की समृद्ध हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों के उत्पाद की बिक्री तथा कलाकारों के सामाजिक आर्थिक उत्थान के लिए राज्य सरकार अभिप्रेरक (As Motivaters) की भूमिका निभायेगी। पर्यटन इकाइयों की स्थापना के लिए कृषि भूमि को आरक्षित दरों के एक–चौथाई दाम पर अधिकतम चार बीघा भूमि के आवंटन का प्रावधान किया गया। नये होटलों को शहरी सीमा में भूमि खरीदने पर

पंजीयन शुल्क में छूट का प्रावधान किया गया। इसके अलावा नई पर्यटन इकाइयों को 5 वर्ष तक के लिए विलासिता शुल्क लेने का प्रावधान किया। राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ब्याज और मनोरंजन कर में छूट का प्रावधान किया गया। प्रथम पर्यटन नीति का आकर्षक पहलू स्थानीय निवासियों को रोजगार मुहैया कराना है इस नीति में अकुशल कार्यशक्ति की शत–प्रतिशत भर्ती स्थानीय स्तर पर करना सुनिश्चित किया गया।

होटल नीति 2006

राजस्थान में होटलों में जगह की मांग व आपूर्ति के बीच अन्तर को पाटने के उद्देश्य से और भविष्य में पर्यटकों की वृद्धि की संभावना को दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार द्वारा होटल नीति 2006 की घोषणा की गई। इस नीति में निम्नलिखित बातों को सम्मिलित किया गया।

1. राज्य सरकार ने होटलों के लिए भूमि बैंक की स्थापना की घोषणा की।
2. होटलों एवं आवास सुविधा की आधारभूत संरचना हेतु भूमि उपलब्ध कराने में जयपुर विकास प्राधिकरण, स्थानीय निकाय, ग्राम पंचायतों के अधिकारी तथा जिला कलेक्टरों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी।
3. नई होटल नीति में होटलों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है इसमें एक, दो, तीन सितारा का क्षेत्रफल 1200 वर्गमीटर तक, 4 सितारा होटल का 6000 वर्ग मीटर तक तथा 5 सितारा एवं ऊपर की श्रेणी का 18000 वर्ग मीटर तक क्षेत्रफल रख गया है।
4. राज्य सरकार ने होटल की जमीन की बिक्री के लिए विशेष आरक्षित कीमत की घोषणा की जिसकी पालना स्थानीय संस्थाओं को करनी होती है।
5. नई होटल नीति में होटल की जमीन लेने में होटल वालों/ टूर–आपरेटर को प्राथमिकता दी जायेगी। भूमि क्रेताओं को भूमि परिवर्तन चार्जेज में 100 प्रतिशत छूट एवं मनोरंजन कर में 100 प्रतिशत छूट मार्च 2010 तक दी जायेगी। इसके अलावा होटल निर्माताओं को जलापूर्ति, गृहकर आदि में रियायत दी जायेगी। सरकार हेरिटेज–होटल्स की स्थापना को प्रोत्साहन देगी।

राजस्थान टूरिज्म यूनिट पालिसी, 2007

राज्य सरकार की होटल नीति 2006 'राजस्थान टूरिज्म यूनिट पालिसी 2007' द्वारा प्रतिस्थापित की गई। होटल नीति 2006 के तहत प्रमुख श्रेणी के होटलों को ही छूट का प्रावधान था जबकि नई नीति के तहत् अन्य श्रेणी के होटलों, हैरिटेज होटलों एवं पर्यटन इकाइयों यथा हॉलिडे रिसोर्ट एवं रेस्टोरेंट आदि को भी यह सुविधा उपलब्ध है।

प्रदेश में पर्यटकों की आवक का स्वरूप

राजस्थान के पर्यटन विभाग का मूलमंत्र **'पधारो म्हारे देस'** फलीभूत हो रहा है। इस बात की पुष्टि राजस्थान में देशी और विदेशी पर्यटकों की संख्या में हो रही उत्तरोत्तर वृद्धि से सहज रूप से होती है। भारत आने वाला पर्यटक राजस्थान की ओर खिंचा चला आता है। एक अनुमान के अनुसार भारत आने वाला एक तीसरा पर्यटक राजस्थान अवश्य आता है। राजस्थान में पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है जो निम्नांकित तालिका से स्पष्ट है –

राजस्थान में पर्यटकों की संख्या

(लाख में)

वर्ष	देशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक
1980	24.50	2.08
1990	37.35	4.71
2000	73.74	6.23
2006	234.83	12.20
2007	259.21	14.01
2008	283.59	14.78
2010(दिस.तक)	255.43	12.78

राजस्थान में विगत वर्षों में पर्यटकों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है। देशी पर्यटकों की संख्या 1980 में केवल 24. 50 लाख थी जो बढ़कर 2000 में 73.74 लाख तथा 2008 में और बढ़कर 283.59 लाख हो गई। राजस्थान में विदेशी पर्यटकों की संख्या में भी अच्छी वृद्धि हुई है। विदेशी पर्यटकों की संख्या 1980 में केवल 2.08 लाख थी जो बढ़कर 2000 में 6.23 लाख तथा 2008 में 14.78 लाख हो गई। वर्ष 2007 में सबसे ज्यादा देशी पर्यटक अजमेर में आये यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या 19.96 लाख थी। विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने में जयपुर सबसे आगे है। जयपुर में 2007 में 4.65 लाख विदेशी पर्यटक आये।

पर्यटन विकास की संभावनाएं

राजस्थान के लिए पर्यटन उद्योग वरदान सिद्ध हो सकता है। राजस्थान विविधताओं, जिज्ञासाओं और विचित्रताओं से भरा हुआ प्रदेश है। आज विश्व में राजस्थान की अद्भूत कठपुतली कला, लोक संगीत, भोजा, लंगा, मांगणियार मशहूर है। राजस्थान प्राचीनतम और शिल्प समृद्ध मन्दिरों, अद्भूत और बेजोड़ स्थापत्य कलाओं से भरा पूरा प्रदेश है जिन्हें देखने के लिए दुनिया के व्यक्ति लालायित रहते हैं।

राज्य में एडवेंचर टूरिज्म की पर्याप्त संभावना है। इसके अलावा वाटर सफारी, ग्रामीण पर्यटन, इको टूरिज्म, फार्म टूरिज्म, एज्यूकेशनल टूरिज्म द्वारा भी पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।

राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए मजबूत आधारभूत ढांचा उपलब्ध है। राज्य में 2006–07 में पर्यटकों के लिए 38 होटल, 35 हेरिटेज होटल, 48 पर्यटक स्वागत और सूचना केन्द्र, 3 यात्री निवास, 22 मिडवे और मोटल थे। जयपुर में अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बन जाने से विदेशी

पर्यटकों की आवक में अच्छी वृद्धि हो रहीं है।

राजस्थान में पर्यटन के विकास हेतु राज्य सरकार अनेक कार्यक्रम चला रही है, जिसमें महत्वपूर्ण हैं–

1. पर्यटन साहित्य का प्रकाशन एवं प्रचार–प्रसार।
2. ऐतिहासिक स्मारकों का संरक्षण उपलब्ध कराना।
3. ऐतिहासिक स्मारकों को संरक्षण एवं रख–रखाव।
4. पर्यटक गाइड की व्यवस्था।
5. मरू मेलों का आयोजन।
6. शाही रेलगाड़ी (Palace on Wheels) का प्रारम्भ करना।
7. पैकेज टूर कार्यक्रम जैसे स्वर्ण त्रिभुज (गोल्डन ट्राइंगल–दिल्ली, आगरा, जयपुर, मेवाड़ पैकेज, हवा–महल पैकेज आदि निर्धारित करना।
8. पर्यटन विभाग द्वारा आंचलिक मेलों एवं सांस्कृतिक समारोहों का आयोजन।
9. 'एडवेंचर टूरिज्म' के विकास की योजना तैयार करना।
10. इको, हैल्थ, एडवेन्चर' एवं धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहन देना आदि।

पर्यटन, 'पधारों सा'

राजस्थान में पर्यटन को एक उद्योग घोषित कर दिया गया है। रीको पर्यटन इकाइयों को औद्योगिक क्षेत्रों में औद्योगिक दरों पर भूमि उपलब्ध कराएगा।

पर्यटन इकाई के लिए भूमि का आवंटन पर्यटन इकाई नीति 2007 में प्रदत्त दरों के अनुसार होगा। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि भूमि का रूपान्तरण, रूपान्तरण व विकास शुल्क से पूरी तरह मुक्त होगा।

'पधारों सा' एक अभिनव योजना है जो गुणवत्ता भोजन, प्रसाधन सुविधाओं की सुलभता, कुशल व गुणवत्ता सुविधाएं, बड़े पैमाने पर रोजगार, पर्यटन में लघु उद्यमियों द्वारा निवेश आदि लाभ प्रदान करते हुए निजी क्षेत्र की भागीदारी के साथ गुणवत्तापूर्ण 'वे साइड' सुविधाओं के विकास द्वारा पर्यटन क्षेत्र में रोजगार सृजन लक्ष्य रखा गया है। 'पधारा सा' में रेस्टोरेंट, सुविनियर शॉप्स, सार्वजनिक टेलीफोन और कॉफी शॉप्स प्रकार की इकाइयां सम्मिलित होगी। पधारो सा इकाई का डिजाइन विशिष्ट व ब्रांडेड होगी। पधारों सा की अनुमोदित इकाइयों को प्रोत्साहन के रूप निर्माण/नवीनीकरण की लागत का 25 प्रतिशत अधिकतम 5 लाख रुपए तक भी प्रदान किया जाएगा।

वास्तव में पर्यटन राजस्थान का एक महत्वपूर्ण उद्योग है जिससे न केवल राज्य सरकार को आय होती है अपितु यह हजारों व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करता है। इसी कारण राज्य सरकार का पर्यटन विभाग निरन्तर पर्यटन के विकास में संलग्न है। राज्य में अभी भी अनेक पर्यटक स्थल हैं जिनका यदि समुचित विकास किया जाय तो पर्यटकों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो सकती है। राज्य में पर्यटन विकास की अत्यधिक सम्भावनायें है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पर्यटन स्थल जयपुर क्षेत्र में आता है –
   (अ) शेखावाटी (ब) हाड़ौती
   (स) मेवाड़ (द) ढूढांड़ क्षेत्र
2. रणथम्भौर नेशनल पार्क जिले में है–
   (अ) करौली (ब) सवाईमाधोपुर
   (स) दौसा (द) कोटा
3. सूर्यनगरी के नाम से विख्यात है–
   (अ) बाड़मेर (ब) बीकानेर
   (स) जोधपुर (द) जैसलमेर
4. 'झीलों की नगरी' के नाम से जाना जाता है–
   (अ) जयपुर (ब) अलवर
   (स) उदयपुर (द) राजसमंद
5. पर्यटन को उद्योग का दर्जा मिला–
   (अ) 1989 (ब) 1995
   (स) 1979 (द) 1955

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. जन्तर–मन्तर कहाँ है?
2. ढाई दिन का झौपड़ा किस नगर में है?
3. केवलादेव क्यों प्रसिद्ध है?
4. गागरोन का किला कहाँ है?
5. बीकानेर में कौनसा किला है?
6. ढोला मारू क्या है?
7. राजस्थान के पर्यटन निदेशालय की स्थापना कब हुई?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पर्यटन उद्योग का महत्त्व बताइये।
2. मारवाड़ क्षेत्र के पर्यटन स्थलों का वर्णन कीजिए।
3. जैसलमेर में पर्यटन के आकर्षण केन्द्रों के नाम बताइये।
4. शेखावाटी में कौनसे जिले आते हैं तथा वे क्यों प्रसिद्ध है?
5. हैरिटेज होटल क्या है?
6. राजस्थान में 2008 में कितने पर्यटक आये?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. राजस्थान के पर्यटन क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।
2. राजस्थान सरकार द्वारा पर्यटन विकास के प्रयासों का वर्णन कीजिए।
3. राजस्थान की नई पर्यटन नीति की व्याख्या कीजिए।
4. राजस्थान में पर्यटन विकास की स्थिति तथा संभावनाओं को समझाइये।

□□□